

केवल निजी
वितरण हेतु

हम एक हैं

वर्ष 19
अंक 1

जनवरी - अप्रैल
2011

- सम्पादकीय - पृ...2
- आगामी चौमासे के कार्यक्रम - पृ...2
- रेयुकाई का संसार - पृ...3
- अनुभव सागर पार से - पृ...4-5
- रेयुकाई समाचार - पृ...6-9
- व्यक्तिगत अनुभव - पृ...10
- रेयुकाई अतुल्य कैसे है - पृ...10
- श्रीमती किमी कोतानी के विचार - पृ...11
- उपदेश व कार्यक्रम संवर्धन समिति अध्यक्ष का स्तंभ - पृ...12
- व्यक्तिगत अनुभव - पृ...13
- व्यक्तिगत अनुभव - पृ...14
- आओ जापानी सीखें - पृ...15
- रेयुकाई अभ्यास - पृ...16
-

आईए अपने वंशजों को सौंपें एक श्रेयतर समाज!



म एक हैं के संपादकीय विभाग के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक अभिनंदन।

विगत कुछ माह हम दिल्ली कार्यालय में अत्यधिक सक्रिय रहे हैं। कुछ महत्वपूर्ण प्रगतियां भी हुई हैं।

हमें उम्मीद है कि वे सभी सदस्य जिन्होंने हिंदी गोहोम्यो दीक्षा समारोह में भाग लिया था, वे अपना दायित्व पूरा करने ही वाले हैं। मैं उन सभी सदस्यों का परिश्रम करने हेतु उत्साहवर्धन करना चाहूंगा जिन्होंने अपना प्रशिक्षण पूरा करके दीक्षा समारोह में भाग लिया, ताकि हमारे सदस्य इससे लाभ उठा सकें।

रिकार्ड संख्या में वरिष्ठ सदस्य मिरोकुसान प्रशिक्षण के लिए जापान गए। शिबुचो सुशील दहिया को शाकादेन में 'दोशी' बनने का गौरव मिला, जो सम्मान बहुत कम लोगों को ही मिल पाता है। हमें उम्मीद है कि वहां मिले अनुभवों से सभी सदस्यों को लाभ मिलेगा।

अप्रैल 2011 से हम कुछ ऐसे परिवर्तनों की आशा कर रहे हैं, जिनसे हमें रेयुकाई के अभ्यास की मूल पद्धति की ओर वापसी की उम्मीद है। हमें उसी बिंदु पर वापस जाने, जहां से हमने शुरू किया था और अपने सदस्यों को पिछले दो दशकों में हासिल सभी अनुभवों के लाभ प्रदान करने की आवश्यकता है। 'हम एक हैं' के संपादक मंडल की ओर से सभी सदस्यों को इस प्रयास में अच्छे समाचार मिलने की शुभ कामनाएं।

हमें उम्मीद है कि इन परिवर्तनों से सभी कार्यकलापों को एक नई गति मिलेगी, जिससे नेतृत्व की एक नई पौध तैयार होगी जो आध्यात्मिक सहचर्य संस्था (रेयुकाई इंडिया) को अगले दशक में ले जाएगी।

मैं आगामी महीनों के लिए सभी सदस्यों का पुनः अभिनंदन करता हूँ। अपनी प्रतिबद्धताओं पर अडिग रहिए और आइए, हम अपनी संतति के लिए इस संसार को श्रेयस्कर बनाने की अपनी प्रतिज्ञा को पुनः दोहराएं।

नव वर्ष की शुभकामनाएं।

नमो-म्यो-हो-रें-गे-क्यो

सम्पादक



आगामी चौमासे के कार्यक्रम

दिल्ली में भावी चौमासे के कार्यक्रम:

16 जनवरी 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

20 फरवरी 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

20 मार्च 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

17 अप्रैल 2011 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

बोकारो में भावी चौमासे के कार्यक्रम:

2, 9, 16, 23 व 30 जनवरी 2011 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

6, 13, 20 व 27 फरवरी 2010 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

6, 13, 20 व 27 मार्च 2010 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

3, 10, 17 व 24 अप्रैल 2010 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

फर्रुखाबाद में भावी चौमासे के कार्यक्रम:

2 व 30 जनवरी 2011 फर्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

6 व 27 फरवरी 2011 फर्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

6 व 27 मार्च 2011 फर्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवसरीय आम सभा का आयोजन।

3 व 24 अप्रैल 2011 फर्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु प्रथम/अंतिम रविवसरीय आम सभा का आयोजन।



रेयुकाई का संसार



शाकादेन के भीतरी भाग का भव्य दृश्य

व्यापितगत अनुभव

सावहारपारसी

अपने परिवार और स्थानीय समुदाय के विकास को अपना लक्ष्य बनाते हुए

मुझे आठ वर्ष पहले रेयुकाई से जुड़ने का अवसर मिला था, जब मेरी शादी हुई ही थी। उन दिनों मैं केवल स्वयं के बारे में ही सोचा करती थी और अपने आसपास के लोगों के बारे में कभी नहीं सोचा और मेरा स्वभाव भी बहुत हठीला था। उन दिनों मैं अपने सास-ससुर के साथ रहा करती थी। मेरी अपने सास-ससुर और अपने बीच के संबंधों के बारे में सीधी सी सोच थी: यह कि सास-ससुर मेरे पति के माता-पिता है और मेरा उनसे कोई लेना-देना नहीं है, ऐसा मैं सोचती थी। यद्यपि हम एक साथ रहते थे फिर भी हम दूरी बनाए रखते थे, अर्थात् ठंडा पारिवारिक माहौल था।

उन्हीं दिनों मैं अपने मौजूदा शाखा लीडर (शिवुचो) से मिली और उन्होंने कहा, “रेयुकाई की यह शिक्षा तुम्हारी नियति बदल सकती है। इस शिक्षा से तुम अपने आसपास के माहौल को बेहतर बना सकती हो।” चूंकि मैं अपने परिवार और स्वयं से निराश थी, मैंने सोचा कि अपने आसपास का जीवन बेहतर बनाने के लिए मैं इसे किसी भी तरह आजमाऊंगी। रेयूकाई में मेरे कई मित्र बने और ऐसे कई लोग मिले जो एक साथ मीरोकुसान नामक स्थान पर पूरे देश के कई हिस्सों से एकत्र होने आए थे। वहां मैं जहां भी गई, मुझे मेरे जैसे ही लोग मिले जो कि

अति आत्मकेंद्रित, हठीले किस्म के थे जो अपने परिवार को अपना परिवार नहीं समझते थे। उस समय मुझे वास्तव में महसूस हुआ कि मुझे स्वयं की बेहतरी के लिए कुछ करके स्वयं को बदलना होगा। मैंने सचमुच यह महसूस किया कि मुझे अपनी पारिवारिक स्थिति को बदलना है।

“यदि तुम थोड़ा भी किसी के काम आना चाहो, यदि तुम ब्राजील एवं वहां की जनता के काम आना चाहो, तो तुम्हें जाना ही चाहिए, बल्कि मैं चाहूंगा कि तुम्हें हर हाल में वहां जाना चाहिए।”

उन छः वर्षों के दौरान मैंने अपना सर्वोत्तम प्रयास किया था और अपने पति के साथ मेरे कई बार झगड़े भी हुए थे। मुझमें अभिमान भरा था चूंकि मेरा मानना था कि सारा खोट मेरे पति और उसके परिवार में ही है। मैंने स्वयं को प्रतिबंध में नहीं देखा था और यही सोचती थी कि मैंने अपनी पूरी कोशिश की है।

दो वर्ष पहले मेरे पति के एक रिश्तेदार बीमार हो गए। तब मैंने फैसला किया कि मैं

ऐसे परिवार में नहीं रहना चाहती। मैं अपने बच्चों समेत इस घर को छोड़ दूंगी। तब मेरे शाखा लीडर ने कहा, “इस शिक्षा का अभ्यास दुनिया के दूसरे हिस्से में कई लोगों द्वारा किया जाता है। क्या तुम मेरे साथ ब्राजील चलोगी?” मैंने सोचा कि मैं अपने दो छोटे बच्चों को छोड़कर उसके साथ कैसे जा सकती हूं, जबकि मेरा अपना परिवार बिखरने की कगार पर है। मैंने सोचा कि कैसे भी मैं अपने पति से बात करूंगी। इसलिए मैंने साहस बटोरा और उनसे अपने मन की बात कह दी। मुझे उनसे पूर्णतः अनापेक्षित जवाब मिला। उन्होंने कहा, “यदि तुम थोड़ा भी किसी के काम आना चाहो, यदि तुम ब्राजील एवं वहां की जनता के काम आना चाहो, तो तुम्हें जाना ही चाहिए, बल्कि मैं चाहूंगा कि तुम्हें हर हाल में वहां जाना चाहिए।” तुम बच्चों की चिंता मत करो क्योंकि घर के बाकी लोग इसमें अपना सहयोग करेंगे और तुम्हारी महीने भर की ब्राजील यात्रा के दौरान उनका ख्याल रखेंगे।

मैं अपने पति की बात सुनकर वाकई हैरान थी। मैंने सोचा कि मैं अपने पारिवारिक संबंध को फिर से, एक आखरी बार, सुधारने की कोशिश करूंगी और मैंने सोचा कि मैं अगर वाकई ब्राजील और वहां की जनता के कुछ काम आ जाऊं तो मेरे लिए अच्छा होगा, और मैं ब्राजील रवाना हो गई।

अनुभव सागरपार से

ब्राज़ील की जनता में ब्यासी से भी अधिक विभिन्न राष्ट्रीयताओं के लोग शामिल हैं। कई लोग चाकू और बंदूकें रखते हैं और कानून एवं व्यवस्था की स्थिति ठीक नहीं है। इस प्रकार के देश में मैं कई लोगों से मिली जो रेयुकाई का अभ्यास करते हैं। उनमें से प्रत्येक ने कहा कि, “हम अपने देश का सुधार करना चाहते हैं। हम एक शांतिप्रिय देश चाहते हैं। हम अपने देश को ऐसा बनाना चाहते हैं जहां हर कोई संतुष्ट हो और अमीर और गरीब के बीच कोई दूरी न हो।”

एक युवक ने कहा कि उसके हाई स्कूल के दिनों में कोई उसकी परवाह नहीं करता था, इसलिए वह अपने इलाके का सबसे बदमाश लड़का था। हर कोई उससे डरता था लेकिन जब वह रेयुकाई में आया तो वह उन लोगों से मिला जिन्हें उसकी परवाह थी। उसने स्वयं की ओर ध्यान दिया और महसूस किया कि उसे जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। अब उसकी इच्छा है कि वह अपने समुदाय और समाज की बेहतरी के लिए काम करे। उसने कई लोगों के साथ इस शिक्षा के संबंध में चर्चा की तो उसके कई मित्र बन गए। वह अपने आसपास के लोगों को खुशी देने, अपने समुदाय और देश को शांतिप्रिय बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है। उसने मुझे बताया कि यह सब करके वह अपनी उम्मीद से भी अधिक अच्छा व्यक्ति बन गया है।

इस युवक की बात सुनने और उसके अनुभव सीधे उससे जानने के बाद मुझे महसूस हुआ कि मैं अपने दिलो-दिमाग और मानवीय स्वभाव में कितनी दरिद्र थी। ये युवक दूसरों में खुशी बांटने के लिए यह शिक्षा पहुंचाने कई सौ किलोमीटर की यात्राएं करते हैं, कोई परवाह नहीं करते कि सामने कौन है, कोई परवाह नहीं कि खाने को है या नहीं, यहां तक कि चाहे जान भी गवांने का डर हो।

इन शालीन युवकों से मिलकर, मैंने अपनी स्थिति पर विचार किया कि जापान में पैदा होने के बावजूद, सिवाय धन और भौतिक संपत्ति के पीछे भागने के, मैंने क्या किया है? यहां मेरे पास रेयुकाई की शिक्षा है, फिर भी मैंने अपना जीवन तंग दिमाग और छोटे दिल के साथ जिया है। जब मुझे यह अनुभूति हुई तो स्वयं पर शर्मिंदगी महसूस हुई। इस बड़े देश ब्राज़ील में, बहुत से लोग अपनी जान की परवाह किए बिना भी, यह भी जाने बिना कि उनका कल क्या होगा, इस अभूतपूर्व शिक्षा को जी-जान से स्वयं पर लागू कर रहे हैं। दूसरी ओर जापान जैसे साधन-संपन्न देश में रहते हुए मैंने क्या किया है? मैंने दिल से सोचा कि क्या हम वास्तव में खुश हैं।

अब हममें से प्रत्येक को साहस करना चाहिए और अपने आसपास के लोगों तक इस शिक्षा का प्रसार करना चाहिए और अन्य लोगों तक हमारी स्नेहिल भावनाओं को पहुंचाना चाहिए।

फिलहाल तो हम सोचते हैं कि पैसे और साजो-सामान से समस्याएं सुलझ जाएंगी और किसी तरह से सब ठीक हो जाएगा। फिर भी, दिल और दिमाग की असली समृद्धि अन्य के लिए एवं जिस समुदाय में हम रहते हैं, उसके लिए आदर भावना रखने में है और हम सब के लिए एक श्रेष्ठ राष्ट्र बनाने में है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता? मुझे पता चला है कि हमारी शाखा लीडर (शिबूचो) ब्राज़ील गई थी, जहां की भाषा वे नहीं जानती थीं और तब भी वहां उन्होंने ब्राज़ील और उसके लोगों को खुशी देने के लिए उस शिक्षा का प्रसार किया।

वह वहां 20 वर्षों से जा रही हैं।

यदि आप एक देश की भाषा नहीं जानते, यदि आप वह भाषा बोल नहीं सकते, मुझे महसूस हुआ कि यदि आप ईमानदारी से कोशिश करें तो आपकी “दूसरों के लिए आदर” की भावना उन तक पहुंच ही जाएगी। इसलिए, अब हममें से प्रत्येक को साहस करना चाहिए और अपने आसपास के लोगों तक इस शिक्षा का प्रसार करना चाहिए और अन्य लोगों तक हमारी स्नेहिल भावनाओं को पहुंचाना चाहिए। मुझे महसूस होता है कि हमारे ये कार्यकलाप बड़ी शक्ति पैदा कर सकते हैं और यह शक्ति हमारे समुदायों और हमारे देश को बेहतरी प्रदान कर सकती है, चाहे हमारे समुदायों और देश का साथ देना हमारे लिए मुश्किल ही क्यों न हो।

मैं वाकई एक स्वार्थी महिला रही हूं और मैं अपने पति और उनके रिश्तेदारों को मेरा साथ देने के लिए हार्दिक धन्यवाद देना चाहूंगी यद्यपि मैंने केवल अपने हित के बारे में ही सोचा। मैंने अपने आसपास के लोगों को अपने हठीले स्वभाव के कारण काफी कष्ट दिए हैं जिसके लिए मैं दिल से माफी चाहती हूं। मैं अपने दैनिक जीवन में इस शिक्षा को अपनाकर इन लोगों का ये कर्ज भी उतारूंगी।

यद्यपि एक व्यक्ति की ताकत कम होती है, किंतु जब बहुत से लोग एकजुट हो जाते हैं तो वे एक बड़ी शक्ति बन जाते हैं। मैं भावी जापान का समर्थन करने वाली एक युवा होने के नाते, अपने देश और समुदाय का साथ देने में अपनी पूरी ऊर्जा लगा दूंगी।

- आको मुराओ (30 वर्ष)
कागावा प्रांत, जापान

फर्रुखाबाद द्वारा नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर आयोजित

चतुर्थ ब्रांच फर्रुखाबाद में नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जापान से आये मिहाता शिबु चतुर्थ ब्रांच के प्रमुख नितोजी एवं भारतीय शाखा के प्रमुख हिरोताका नाकाजीमा ने अपने विचारों से सदस्यों का मार्गदर्शन किया।

सर्वप्रथम पूर्ण विधि के साथ सूत्रपाठ किया गया, तदुपरान्त संस्था के वरिष्ठ सदस्य अजय अवस्थी ने संस्था एवं उसकी गतिविधियों के बारे में उपस्थित सदस्यों को अवगत कराया तथा अपने व्यक्तिगत अनुभव में कहा कि संस्था में आने तथा उसकी क्रियाओं में भाग लेने से मेरी सोच सकारात्मक हो गई है, मेरे निवास पर सोकाइम्यो की स्थापना हो गई है सोकाइम्यो के सम्मुख स्वच्छ मन से सूत्रपाठ करने में परम शान्ति की अनुभूति प्राप्त होती है और अपने पूर्वजों का अपने समीप होने का अनुभव होता है तथा ऐसा महसूस होता है कि वे अदृश्य रूप में समय-समय पर अपने आशीर्वाद स्वरूप अपने होने की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते रहते हैं।

अगले चरण में माईकावा जी ने 'सी डी प्लेयर' पर शिक्षाप्रद फिल्म के द्वारा सदस्यों को संस्था के विषय में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि यह मात्र 'फिल्म' नहीं है। यह 'फिल्म' हमें हर पल यह बताती है कि हमें किस मार्ग पर चलकर एक अच्छे राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य सहयोग करना है। जापान से आये मिहाता शिबु ने अपने वक्तव्यों में कहा कि संस्था की बारीकियों को अत्यधिक ध्यान से समझने की आवश्यकता है यदि हम संस्था के उद्देश्यों को ठीक प्रकार से समझ पायेंगे तभी अपने सदस्यों को भी उसका पालन करने को कह पायेंगे, इसमें अत्यधिक नियम एवं संयम की आवश्यकता है। ऐसा करने से हम सब एक दूसरे के साथ व्यक्तिगत तौर से जुड़ पायेंगे।



यह संस्था के लिये अत्यधिक आवश्यक है। भारतीय शाखा के प्रमुख हिरोताका नाकाजीमा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्था की गतिविधियों का ठीक प्रकार से क्रियान्वयन करने के लिये संस्था के बारे में पूर्ण रूप से समझने की आवश्यकता है, सूत्रपाठ के बारे में चर्चा करते समय उन्होंने कहा कि सूत्रपाठ के प्रत्येक अध्याय को अत्यधिक मनन करने व समझने की आवश्यकता है तभी हम भगवान बुद्ध की शिक्षाओं का अनुग्रहण करके उनके बताये मानवता एवं भलाई के मार्ग पर चलकर एक अच्छे राष्ट्र, समाज, देश तथा विश्व के निर्माण में अपना सहयोग कर सकते हैं। यदि ऐसा करने में हम सभी सफल रहें तो यह मानव जीवन धन्य हो जायेगा।

संस्था के वरिष्ठ सदस्य व जुन शिबुचो योगेश्वर प्रधान ने उपस्थितिगण तथा अन्य नागरिकों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अविनाश दूबे, बलराम यादव, कुलदीप गुप्ता, शकुन शर्मा, ज्योति प्रधान, कोमल शाक्य, राहुल कुमार, अजय सिंह, बच्चू सिंह, ऊषा प्रधान, अभिषेक श्रीवास्तव, नरेन्द्र सक्सेना, सुपर्व प्रधान, राजकुमार, खुशबू शाक्य, अनुपम सक्सेना, दिलीप कुमार, कृष्ण कुमार कश्यप, सर्वेश यादव, शरद यादव, प्रवंश सक्सेना आदि गणमान्य नागरिकों का अतुलनीय सहयोग रहा।

- रिपोर्ट: योगेश्वर प्रधान, चतुर्थ शाखा, फर्रुखाबाद





अलीगढ़ इकाई द्वारा परिवार दिवस आयोजित

अलीगढ़ यूनिट द्वारा इस बार परिवार दिवस का आयोजन धम्म भूमि मलोखड़ा पर डा. अम्बेडकर शिक्षण संस्थान पलवल, हरियाणा पर दिनांक 17 अक्टूबर 2010 को 'धम्म उत्सव' के रूप में किया गया।

सुबह 9 बजे से 11 बजे तक बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 65 विद्यार्थी शामिल हुए। प्रातः 11 से 12 बजे तक नाश्ते का आयोजन किया गया। 12 बजे से संस्था के बारे में बताया गया तथा अतिथिगणों का पुष्पों द्वारा स्वागत किया गया।

इस अवसर पर महिलाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत गीत आदि प्रस्तुत किये। वक्ताओं में डा. के.के. राहुल, जीत सिंह बौद्ध, निर्मल राहुल आदि ने भाषण किये। संस्था क्या-क्या कार्य करती है, कैसे करती है, पूर्वज स्मरण आदि के बारे में बताया गया। वार्षिक 60 रुपये सदस्यता शुल्क व ओया-कोदोमो की प्रक्रिया आदि के विषय में बताया गया। तीन गिलास का महत्व समझाया गया।

अन्त में संगीत कार्यक्रम के साथ व पुरुस्कार वितरण कर कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

- रिपोर्ट: शिबुचो जीतसिंह बौद्ध, अलीगढ़



अलीगढ़ द्वारा आंतरिक स्वविकास कार्यक्रम आयोजित

परम श्रद्धेय माननीय एच. माईकावा की स्वीकृति उपरान्त सदस्यों को प्रस्तावित वार्षिक आंतरिक स्वविकास कार्यक्रम के बारे में सूचित किया गया। सूचना उपरान्त 40 सदस्यों द्वारा निर्धारित धनराशि जमा की गई। कुछ सदस्य बिना देय राशि व खानपान की व्यवस्था के साथ लिये गये, कुल सदस्य 52 थे जिनके साथ प्रशिक्षण किया गया। निर्धारित तारीख को कार्यक्रम से तीन दिन पूर्व बस खाना की गयी और जगह-जगह ठहरते हुए गंतव्य की ओर प्रस्थान किया गया। लखनऊ, श्रावस्ती, लुम्बिनी, कुशीनगर, वैशाली, नालन्दा, राजगीर होते हुए कारवां बोधगया पहुँचा। राजगीर में गृद्धकूट पर्वत पर जाप व सूत्रपाठ किया गया और गृद्धकूट व सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र के बारे में समझाया गया। दिनांक 19.11.2010 को बोधगया में संघमित्रा गैस्ट हाऊस में आंतरिक स्वविकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वहाँ पर सदस्यों द्वारा व्यावहारिक जाप, सूत्रपाठ, प्रातः सूर्यनमस्कार आदि किया गया।

सदस्यों द्वारा जापानी 80 फुट प्रतिमास्थल पर सामूहिक फोटोग्राफी भी की गई, परन्तु हमारा कैमरा खराब होने के कारण अधिकतर फोटो खराब हो गये। 21.11.2010 को सारनाथ आकर भगवान बुद्ध के दांत के दर्शन कर अलीगढ़ में 22.11.2010 को वापस आकर प्रशिक्षण समाप्त किया गया। विसर्जित होने से पूर्व सभी सदस्यों ने अधिक से अधिक सदस्य बनाने का संकल्प लिया। भविष्य में लगभग 100 सदस्य बनने की सम्भावना है, सभी सदस्यों में बेहद उत्साह है।

सदस्यों की की यह भी मांग है कि आंतरिक स्वविकास कार्यक्रम वर्ष में एक बार की बजाय दो बार करने पर लाभप्रद होगा। आंतरिक स्वविकास कार्यक्रम प्रशिक्षण ही सदस्यों के लिये प्रभावशाली कार्यक्रम है, जिससे सदस्य सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, सभी सदस्यों ने संस्था का धन्यवाद किया, सहयोग करने का संकल्प लिया।

- रिपोर्ट: शिबुचो जीत सिंह



दार्जिलिंग में आन्तरिक स्वविकास प्रशिक्षण

बोकारो, झारखंड में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

पश्चिम बंगाल के मनोरम शहर दार्जिलिंग जो पहाड़ों पर बसा है, जहाँ की जलवायु में सालभर ठंड रहती है, पल-पल मौसम बदलता रहता है, ऐसे स्थान पर एम.सी. संजय शान ने 28-29 सितम्बर, 2010 को हरदीप लौज में आयोजित आन्तरिक स्वविकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का नेतृत्व किया। सभी सदस्य एक हाल में एकत्रित हुये। कार्यक्रम के अंतर्गत देशी राजेश सान ने सूत्रपाठ कराया। इसके बाद ओदाईमोकु अभ्यास कराया गया। एम.सी. संजय शान ने आन्तरिक स्वविकास प्रशिक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला।

दोपहर के भोजन के बाद दूसरा सत्र आरम्भ हुआ, इस सत्र में तीन अलग-अलग ग्रुप में सदस्य बँट गये और आपस में चर्चा किया। चर्चा के जवाब ग्रुप लीडर ने अपने-अपने स्तर से दिया, जिसका निचोड़ निकला लीडर और सदस्य आपस में मिचिबिकी नहीं करते, जिससे सदस्य संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है, इसके लिये नीचे से ऊपर तक सभी लीडर जवाबदेह हैं।

अंत में शिबुचो आर.पी. सिन्हा ने आन्तरिक स्वविकास प्रशिक्षण में भाग लेने के लिये आये सदस्यों को धन्यवाद दिया। आगे इसी तरह के कार्यक्रम करते रहने के लिये वचन दिया, सदस्यों से आग्रह किया कि नये सदस्यों को जोड़ें और आन्तरिक स्वविकास प्रशिक्षण के लिए लायें तथा संस्था के प्रत्येक कार्यक्रम में भाग लें।

- रिपोर्ट: संजय सान, बोकारो



आध्यात्मिक सहचर्य संस्था रेयुकाई, चतुर्थ शाखा, बोकारो के तत्वावधान में बोकारो बुद्ध विहार के प्रांगण में दिनांक 03.10.2010 को भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस भाषण प्रतियोगिता में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। भाषण का विषय था - फल माँवितजे वित इमजजमत म्दअपतवदउमदज्ज अर्थात् "बेहतर पर्यावरण के लिये मेरा प्रयास"।

प्रतियोगिता संचालक श्री तेजपाल सिंह ने उद्घाटन भाषण देते हुये निर्णायक मंडल से परिचय कराया, जिसमें डा. एस.आर. माहतो, श्री आर.आर. डांगी और श्री ए. आर. बेदिया थे। एक-एक कर सभी प्रतिभागियों ने पर्यावरण असंतुलन, पर्यावरण प्रदूषण एवं निवारण के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये बेहतर पर्यावरण के लिए अपना-अपना अनुभव व योगदान श्रोताओं को सुनाया। भाषण समाप्ति पर कुछ ही क्षणों में निर्णायक मंडल के वरिष्ठ सदस्य डा. एस. आर. महतो ने निर्णय सुनाया। निर्णायक मंडल ने ईमानदारी व बखूबी से अपनी दायित्वों को निभाया। श्री कालीपद रजक के कर-कमलों से विजेताओं खुशबू कुमारी, पूजा कुमारी एवं दीक्षा सिंह को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार मिला। अंत में शिबुचो वी. एन. मेहता के धन्यवाद ज्ञापन के साथ प्रतियोगिता की समाप्ति हुई। भाषण प्रतियोगिता को सफल बनाने में सर्वश्री नगीना प्रसाद महतो, बागीश्वर साह, प्रभु नारायण सिंह, के. पी. रजक, वी. एन. मेहता आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

- रिपोर्ट: बागीश्वर साह, बोकारो





स्कूल के बच्चों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता

बोकारो में चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था रेयुकाई द्वारा बोकारो में छोटे-छोटे गरीब बच्चों को जो शिक्षा दी जा रही है उन्हीं बच्चों के बीच दिनांक 22.09.2010 को एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस चित्रकला प्रतियोगिता में स्कूल के सभी 30 बच्चों ने भाग लिया। चित्रकला का विषय था - "पर्यावरण"।

सभी प्रतिभागियों ने बहुत ही सुन्दर तरीकों से कुशलतापूर्वक पर्यावरण पर अपनी कुचियों से कलात्मक ढंग से चित्र बनाया। निर्णयकर्ता चित्रकला शिक्षिका श्रीमती उमासिंह ने प्रतिभागी बच्चों द्वारा बनाये गये आकर्षक चित्रकारी में से तीन बच्चों को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमशः मनोरमा कुमारी, पूनम कुमारी व श्रुति कुमारी को चयनित किया गया। उसी समय पुरस्कार दिया गया। बाकी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। श्रीमती उमासिंह ने बच्चों को अपनी प्रतिभा निखारने का संदेश भी दिया। बच्चों की शिक्षिका श्रीमती मंजू साह ने सभी को धन्यवाद किया।

- रिपोर्ट: शिबुचो बागीश्वर साह, बोकारो



आध्यात्मिक सहचर्य संस्था रेयुकाई के चतुर्थ शाखा, बोकारो के तत्वावधान में बोकारो बुद्ध बिहार के प्रांगण में दिनांक 26.09.2010 को चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस चित्रकला प्रतियोगिता में 5 वर्ष से 12 वर्ष के आयु के 30 बच्चों ने भाग लिया। चित्रकला का विषय था - "पर्यावरण"।

सभी प्रतिभागियों ने बहुत ही सुन्दर तरीकों से कुशलतापूर्वक पर्यावरण पर अपनी कुचियों से कलात्मक ढंग से चित्र बनाया। निर्णयकर्ता चित्रकला की शिक्षिका श्रीमती उमा सिंह ने प्रतिभागी बच्चों द्वारा बनाये गये आकर्षक चित्रकारी में से तीन बच्चों को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के लिये चयन किया।

दिनांक 03.10.2010 को भाषण प्रतियोगिता समारोह में ही श्री कालीपद रजक ने विजेताओं अनन्या स्पृहा, मल्लिका स्वराज व प्रकाश कुमार को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किया। बाकी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। मुख्य अतिथि ने विजेता बच्चों को बधाई दी और अपनी प्रतिभा को पूरी लगन से निखारने का संदेश दिया। अंत में श्री भी.एन. मेहता के धन्यवाद ज्ञापन के साथ प्रतियोगिता की समाप्ति हुई। चित्रकला प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह में नगीना प्रसाद महतो, वागीश्वर साह, भी.एन. मेहता, प्रभु नारायण सिंह, डा. एस.एस. महतो, ए. आर. वेदिया, आर.आर. डांगी उपस्थित थे।

- रिपोर्ट: शिबुचो बागीश्वर साह, बोकारो





परिवर्तन

कृते: होजाशु अविनाश दूबे ० ओया: जुन शिबुचो अजय अवस्थी ० शिबुचो: श्री संजय श्रीवास्तव

मैं अविनाश दूबे वर्ष 1999 में फ़र्रुखाबाद रेयुकाई की चौथी शाखा का निष्क्रिय सदस्य बन गया। मुझे रेयुकाई की गतिविधियां समझ में नहीं आती थीं, इसलिये मैं रेयुकाई से दूर भागने लगा। एक दिन मेरे ओया श्री अजय अवस्थी एवं शिबुचो श्री संजय श्रीवास्तव द्वारा मुझे रेयुकाई के बारे में तार्किक ढंग से समझाया गया, तो मैं रेयुकाई के कार्यक्रमों में भाग तो लेने लगा, किन्तु मैं उन्हें गम्भीरता से न लेकर मौज-मस्ती का साधन समझता था।

एक बार रेयुकाई द्वारा आयोजित परिवार दिवस कार्यक्रम में सुशील दहिया जी, जिन्हें मैं अक्सर टेलीविज़न पर देखा करता था, भी आये। उनसे मिलकर मुझे लगा कि रेयुकाई के माध्यम से मैं विख्यात हस्तियों से मिल सकता हूँ। फिर मैंने अपने ओया से इस बारे में बात की तो पहले उन्होंने नित्य फ़र्रुखाबाद कार्यालय में आकर 'नमु-म्यो-हो-रेन्गे-क्यो' का जाप करने के लिये कहा, मैं वहाँ नित्य जाकर पाठ करने लगा। मुझे यह सब बहुत अच्छा लगने लगा, यह सब करते हुये मुझमें कुछ सुधार के संकेत दिखने लगे। मेरी दिनचर्या नियमित होने लगी, जबकि पहले मैं बेतरतीब तरीके से काम करने के कारण अक्सर सीनियर्स के कोपभाजन का शिकार बनता था। जबकि आज मैं शहर का जाना-माना आयकर अधिवक्ता हूँ।

वर्ष 2005 की अगस्त में ऋषिकेश में आयोजित आन्तरिक स्वविकास

कार्यक्रम में हिस्सा लेने का अवसर मिला। यह कार्यक्रम अपने आपमें काफ़ी भव्य था परन्तु श्री सुशील दहिया एवं श्री संजय श्रीवास्तव के विचारों ने मेरी सोच को सकारात्मकता की ओर मुड़ने को विवश किया। कार्यक्रम से लौटने के बाद मेरे ओया ने मेरे जीवन में परिवर्तन लाने में बहुत सहयोग किया तथा मुझे बताया कि मानव होकर सभी मानव मात्र के लिये इस शिक्षा का प्रचार तथा समाज में एक उदाहरणीय व्यक्ति बनकर कुछ अच्छा कर दिखाने की भावना अपने अन्दर उत्पन्न करो।

9 अगस्त 2009 को श्री माईकावा एवं श्री अरुण बनर्जी के द्वारा मेरे घर में सोकाइम्यो की स्थापना की गई। अब घर पर इसके समक्ष बैठकर सच्चे हृदय से सूत्रपाठ करता हूँ। सूत्रपाठ करने से कम समय में मनुष्य अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अवश्य ला सकता है।

मैं यह मानता हूँ कि बेहतर समाज की स्थापना की सोच रेयुकाई का मुख्य बिन्दु है। एक ऐसा समाज जिसे हम गर्व से आगे आने वाली पीढ़ियों को प्रदान कर सकें। रेयुकाई के मार्ग को कोई भी अपना सकता है। इसे अपनाने के लिये अपनी श्रद्धा एवं विश्वास में किसी भी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। मैं आप सभी को रेयुकाई के मार्ग को अपनाने के लिये आमंत्रित करता हूँ, जिससे कि आप अपनी अंतर्आत्मा का विकास कर सकें एवं बेहतर संसार की स्थापना के इस पवित्र कार्य में भाग ले सकें। ✨

रेयुकाई अतुलनीय कैसे है ?

जब धर्म जैसी किसी भावना में विश्वास करने की बात आती है, बहुत से लोगों की यह स्वाभाविक सोच हो सकती है कि इससे हम इस पर निर्भर रहने लगेंगे। लेकिन, रेयुकाई बिल्कुल भिन्न है।

हमारी संस्थापक श्री किमी कोतानी ने इस बात पर सदा जोर दिया है कि कभी दूसरों पर निर्भर नहीं बनें। हममें से प्रत्येक ने इस दुनिया में मनुष्य के रूप में जन्म लिया है। हमें अपने अमूल्य जीवन के दौरान स्वयं और अपने वंशजों के लिए हासिल करने हेतु कुछ ठोस करना चाहिए। यही वह बुनियादी विचार है जिसे उन्होंने हमें सिखाया और जोर देकर कहा कि हमारा ध्येय अपने अंतःमन का विकास करना और स्वयं की नियति तय करना होना चाहिए।”

प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को बेहतर बनाना चाहता है। इसके बावजूद, यदि हम केवल इंतज़ार करते रहेंगे एवं करेंगे कुछ नहीं तो कोई परिणाम नहीं निकलेगा।

हम, रेयुकाई के सदस्य, जिन लोगों से मिलते हैं उनसे अपने बारे में बात करने का प्रयास करते हैं। हम मिचिबिकी करने का प्रयास भी करते हैं, जो दूसरों को रेयुकाई से परिचित कराना है, और एक दूसरे से सीखते हैं। हमने अपने अनुभव से सीखा है कि दूसरों को अपने दर्पण प्रतिबिंब की तरह देखकर स्वयं को जानना ही स्वयं को बेहतर बनाने की कुंजी है। ✨

रेयुकाई के मूलभूत अभ्यास की ओर वापसी

हाल ही में 19 दिसंबर, 2010 को संपन्न हुई टी.ए.पी. समिति की बैठक में लिए गए सबसे महत्वपूर्ण संकल्पों में से एक में समिति ने 'मूल रेयुकाई पद्धति की ओर वापसी' को प्रोत्साहित करने की वचनबद्धता दी। आज अपने इस स्तंभ में मैं इस कथन पर बल देना चाहूंगा और इसका ब्यौरेवार अर्थ समझाऊंगा।

जिन दिनों मैं रेयुकाई का सदस्य बना, उन दिनों सदस्यों को संस्था के विभिन्न चरणों से गुजरना पड़ता था, तभी रेयुकाई के अभ्यास की सही विधि का ज्ञान प्राप्त होता था। अब मैं आपको इन सभी चरणों के बारे में बताऊंगा और आशा करता हूँ कि आप प्रत्येक चरण के महत्व को समझेंगे।

१. मिचिबिकी: एक सदस्य बनाना - रेयुकाई का एक सदस्य मिचिबिकी करता है और एक अन्य व्यक्ति उसके द्वारा रेयुकाई की सदस्यता ग्रहण करता है। मेरे अपने मिचिबिकी ओया ने मुझे रेयुकाई के बारे में बताया और मैं भी पहले रेयुकाई का एक सदस्य बना। जब मैं सदस्य बना उसके बाद रेयुकाई के बारे में बेहतर ढंग से जानने के लिए जब हम मिचिबिकी करते हैं, हमें निम्नलिखित चरणों को जारी रखना चाहिए।

२. सोकाईम्यो की स्थापना: नये सदस्य के घर में सोकाईम्यो की स्थापना करें। यह कार्य बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि सोकाईम्यो के बिना हम अपने नये सदस्य के पूर्वजों के लिए सूत्रपाठ पर अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते। सोकाईम्यो की स्थापना के बाद हमें नये सदस्य के घर जाकर उसकी सहायता करनी चाहिए और उसे नील सूत्र का पाठ करना सिखाना चाहिए। हमें उसे यह भी बताना होगा कि सोकाईम्यो की किस प्रकार देखभाल करनी है और अपने पूर्वजों को किस प्रकार जल आदि अर्पित करना है।

३. अपना प्रतिबिम्ब: अब से हम अपने नये सदस्य को अपने प्रतिबिम्ब के रूप में देखेंगे। हमें उसके व्यवहार में स्वयं का व्यक्तित्व देखना चाहिए और स्वयं में यह खोजें कि हमारे स्वयं में नकारात्मकता कहां है। इससे हमें स्वयं को सुधारने का एक अवसर मिलेगा।

४. काकोचो: उसके बाद हमें अपने सदस्यों के लिए एक काकोचो तैयार करना चाहिए। इस दस्तावेज में सदस्य के सभी

मृतक पूर्वजों के मरणोपरान्त नामों का अभिलेखन होगा। इसे तैयार करके हम इन पूर्वजों पर अपने अभ्यास को केन्द्रित करते हैं।

५. मिचिबिकी: हमें अब अपने सदस्य को स्वयं भी मिचिबिकी करने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि वह उपर्युक्त चरणों का अनुसरण करे। साथ ही उसे निम्नलिखित चरणों से भी गुजरना चाहिए।

६. गोहोन्जों: हमें अपने सदस्यों को स्वयं के गोहोन्जा में सम्बंधित गोहोन्जों स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित करके उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। रेयुकाई सदस्य के विकास में यह एक महत्वपूर्ण चरण है। इससे वह उच्चतर योग्यताओं के लिए तैयार हो पाता है।

७. होजाशु: हमें अपने सदस्य को होजाशु - एक उप-नायक - बनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे वह निष्ठापूर्वक अभ्यास करने के प्रति उत्साहित होगा और अपने सदस्यों के लिए एक अच्छा निदेशक बनेगा।

८. कांग्यो: हमें अपने सदस्यों को कांग्यो अभ्यास करने की सलाह देनी चाहिए। यह शीतकालीन प्रशिक्षण है जिसके लिए स्व-अनुशासन और ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है। यह रेयुकाई अभ्यास के लिए महत्वपूर्ण है। इस अभ्यास का ब्यौरा जानने के लिए कृपया अपने शिबुचो से सलाह करें।

९. शिबुचो: हमें अपने सदस्यों को शिबुचो बनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। शिबुचो बनने के मार्ग में हमें अपने सदस्यों को पहले एक अच्छा होजाशु, फिर एक अच्छा जुन-शिबुचो और उसके उपरान्त एक शिबुचो बनने के दिशा-निर्देश देने चाहिए।

शिबुचो बनने के बाद हमारी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। अब हमें पूरे शिबु का मार्गदर्शन करना होता है और अन्य सदस्यों को उपर्युक्त पूरा चक्र संपूर्ण करने में उनकी सहायता करनी होती है। यदि आपके पास उपर्युक्त प्रक्रिया के बारे में कोई प्रश्न है तो कृपया अपने शिबुचो या दिल्ली कार्यालय से किसी भी प्रकार के स्पष्टीकरण के बारे में संपर्क करें।

शुभ अभ्यास - आइये, रेयुकाई अभ्यास की मूल पद्धति पुनः अपनाएं।



पूर्वजों का आशीर्वाद

कृते: जुन शिबुचो अजय अवस्थी, फतेहगढ़ ० ओया व शिबुचो: श्री संजय श्रीवास्तव

दिनांक 23 अप्रैल, 2010 का दिन काफी खुशगवार था। मैं प्रातःकाल की नित्यक्रिया के उपरान्त जिला शिकोहाबाद के निकट मक्खनपुर गांव जाने के लिये तैयार हुआ ही था कि अचानक मेरे मोबाइल पर एक काल आई। वह काल मेरे मित्र श्री सुनील कुमार सिंह उर्फ बाबी की थी, वह लगभग प्रत्येक दिन मुझे इसलिये काल करता था कि वह मुझे अपनी मोटर साइकिल से कार्यालय छोड़ने व शाम को कार्यालय से वापस भी लाता था। इसी क्रम में उसने 23 अप्रैल, 2010 दिन सोमवार को काल किया, लेकिन मैंने उससे कहा कि मैं आज कार्यालय नहीं जाऊंगा, बल्कि मैं रिश्तेदारी में एक बुजुर्ग का स्वर्गवास हो जाने के कारण शिकोहाबाद जाऊंगा। मेरी योजना थी कि मैं फतेहगढ़ से निकलकर बस द्वारा छिबरामऊ जाऊंगा तथा वहां कुछ रिश्तेदारों के साथ कार द्वारा मक्खनपुर। श्री सुनील के अत्यधिक आग्रह करने पर कि मैं भी मक्खनपुर आपके साथ जाऊंगा के कारण मुझे अपनी सारी योजना को बदलकर मोटर साइकिल से मक्खनपुर जाना पड़ा।

अभी तक सभी कुछ सही था और सभी लोग खुश थे। लगभग 11.00 से 11.30 का समय रहा होगा कि सभी लोगों द्वारा खाना खाने का विचार रखा गया। सभी लोगों ने खाना खाकर आगे का रास्ता तय कर मक्खनपुर पहुंच गये। पूरा परिवार दुःखी था उन सभी को सांत्वना देने के उपरान्त घर के मुखिया से मैंने एक कमरे में अकेले बात करना उचित समझा। सम्पूर्ण घटनाक्रम को सुनने के उपरान्त मैंने उनसे कहा कि जो मैं बोलूँ कृपया उसको आप अवश्य दोहरायें। बुजुर्गों के आशीर्वाद से सराबोर कर देने वाला “नमो-म्यो-हो-रें-गे-क्यो” महान सूत्र का मैंने उनसे तीन बार अच्छी आवृत्ति में उच्चारण करवाया साथ ही यह निर्देश भी दिया कि जब भी आपको समय मिले या मन विचलित हो तो इसको तीन बार मन में उच्चारण अवश्य करना। कुछ समय रुकने के उपरान्त हम सभी चारों लोगों ने वापसी हेतु उनसे आज्ञा ली, मुख्य मार्ग पर आते ही मैंने श्री सुनील जी से कहा कि तुम मोटर साइकिल चलाते-चलाते थक गये होंगे अतः मुझे दो मैं चलाऊंगा।

श्री सुनील जी ने बड़ी ही सहजता से मोटर साइकिल मुझे पकड़ा दी। अभी मैंने 5-7 किलोमीटर ही मोटर साइकिल चलाई

थी कि मेरी दुर्घटना हो गई तथा सुनील जी की नाक से भी रक्त बह निकला और सिर पर हल्की धमक आ गई। इतना सभी कुछ होने के उपरान्त भी मेरे शरीर पर कहीं भी खरोच तक नहीं आई, मैं उठा और श्री सुनील को ग्रामीणों व अपने साथियों की मदद से होश में लाया गया।

अचानक यह सब कुछ कैसे हो गया यह सोचकर सभी लोग स्तब्ध थे। रास्ते में अंधेरा होने के कारण मैंने सुनील जी से कहा कि क्या तुम अब मोटर साइकिल चला सकते हो। उनके हां कहने पर मैंने मोटर साइकिल उन्हें पकड़ा दी और उन्होंने मुझे घर छोड़ा तथा अपने घर को चले गये। एक दिन दो रात व्यतीत होने के उपरान्त श्री सुनील जी की माँ का मेरे पास फोन आया कि सुनील जी की हालत बहुत खराब है आप तुरन्त हमारे घर आ जाइये। मैं तुरन्त उनके घर पहुंचा तो वास्तव में सुनील जी का स्वास्थ्य काफी खराब था। मैंने फोन करके तुरन्त एक कार की व्यवस्था कर उनको अस्पताल ले गया। वहां कुछ इलाज होने के उपरान्त उनको कानपुर रैफर कर दिया गया। बाद में पता चला कि उनके सिर में जो धमक लगी थी उसके कारण उनको ब्रेन हैमरेज हो गया था। अब मैं प्रत्येक रविवार को कानपुर रेजेन्सी अस्पताल जाने लगा तथा सघन परीक्षा इकाई में जाकर उनके कान में “नमो-म्यो-हो-रें-गे-क्यो” सूत्र को तीन बार बोलता था।

श्री सुनील जी में गजब का सुधार होता हुआ दिखाई दिया तथा उनको वहां से डिस्चार्ज कराकर घर ले आया। इसी बीच फतेहगढ़ में रेयुकाई के एक प्रोग्राम में श्री माईकावा जी, श्री हिरोयुकी नाकाजीमा, श्री हिरोताका नाकाजीमा एवं श्री अरुण बनर्जी का आगमन हुआ तो मैंने उन सभी को अपनी सारी घटना से अवगत कराया तो उन लोगों ने श्री सुनील के घर जाकर प्रार्थना की तथा मुझे निर्देश दिया कि पन्द्रह दिनों तक सुनील जी के घर जाकर सूत्रपाठ करें। मैंने उनकी बात का अक्षरशः पालन करने से सुनील जी की सेहत में गजब के लाभ का आंकलन किया। सच्चाई में मैं आप सभी पाठकों को बिना मांगी राय देना चाहूंगा कि नियमित रूप से पाठ करने से मन की दुर्बलता व पूर्वजों से आशीर्वाद ही प्राप्त होता है, कुछ करने से ही परिणाम आता है पढ़कर भूल जाने से कुछ प्राप्त नहीं होता है। ✨



नवचेतना का संचार

कृते: प्रेम कुमार गिरी ० ओया श्री जापानी कुमार गोस्वामी ० शिबुचो: श्री मासुनागा

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था रेयुकाई के सभी सदस्यों को मेरा नमस्कार, मुझे अपने विचारों को लिखते हुये सुखद अनुभूति हो रही है क्योंकि मेरे मन में विचार कई बार उत्पन्न हुये थे लेकिन लिख नहीं पाया था। एक दिन मोबाइल पर वार्तालाप के दौरान श्री अरुण बनर्जी द्वारा मुझे अपनी भावना और विचार को अभिव्यक्त करने की प्रेरणा मिली।

मैं एक साधारण व्यावसायिक परिवार से सम्बन्ध रखता हूँ। मेरा जन्म राजगीर में हुआ, जो एक रमणीक स्थल है, जहाँ शाक्य मुनि 'बुद्ध' के अनेकों साक्ष्य आज भी विद्यमान हैं। मैं बचपन से बुद्ध की प्रतिमा के पास नमन् और दर्शन के लिये घर से निकलकर अक्सर जाया करता था। वेणुवन तथा गृधकूट पर पहुंचने के बाद अन्तरात्मा में शान्ति का अनुभव होता। मुझे बौद्ध संस्था से जुड़ने और कार्य करने की इच्छा होती थी, किन्तु यह बड़ा ही मुश्किल था। सदस्य बनाने और नियम बताने वाला कोई नहीं था।

समय बीतता गया, परिवारिक जिम्मेदारियाँ बढ़ीं। इसी क्रम में मुझे वाराणसी आने का मौका मिला। यहाँ आकर फिर मैंने गौतम बुद्ध की उपदेश स्थली सारनाथ में रहना पसंद किया।

वर्ष 2004 अक्टूबर का महीना था। दिन के 3 बजे के लगभग, मुझे याद है मेरे मित्र जापानी कुमार जी राजगृह से सारनाथ एक जापानी सज्जन के साथ मेरे आवास पर पहुंचे। उन लोगों के पहुंचने पर मेरे परिवार के सदस्यों को बहुत खुशी हुई। मेरे मित्र जापानी कुमार जी ने उनका परिचय कराया और आने का प्रायोजन बताया। इनका नाम श्री तोमोत्सुगु मासुनागा है व ये रेयुकाई 8वीं शाखा से हैं, जो जापान की एक संस्था है तथा संसार के बहुत सारे देशों में अपना कार्य कर रही है।

मैं मासुनागा जी के बातों को सुनकर बहुत ही प्रभावित हुआ और मैंने निश्चय कर लिया कि मैं रेयुकाई से जुड़कर कार्य करूंगा। जापानी कुमार जी जिसे हिन्दी में अनुवाद कर रहे थे। श्री मासुनागा 'कोदोमो' और 'ओया' जैसे शब्दों का प्रयोग करते थे जो आज मैं अच्छी तरह से समझ चुका हूँ। संस्था का सदस्य बनकर मैं खुश था।

मैंने सदस्य बनने के बाद अपने मित्रों और शुभचिंतकों को रेयुकाई के बारे में बताया कुछ लोग तो आसानी से सदस्य बन जाते, किंतु कई लोग प्रश्न भी करते कि 'रेयुकाई क्या है?' 'इससे क्या फायदा है?' यह तो स्वाभाविक ही है। प्रश्नों का उत्तर तार्किक और विनम्र भाव से देकर लोगों को संतुष्ट करने में आध्यात्मिक सहचर्य संस्था की पुस्तिका 'रेयुकाई व

उसका भारतीय स्वरूप' बड़ी ही सहायक सिद्ध हुई।

मुझे शुरू-शुरू में संस्था के नियम, जैसे बैठक के प्रारम्भ में ओदाइमोकु का जाप तथा सूत्रपाठ कठिन प्रतीत होता था, किन्तु अब सुखद महसूस होता है। मुझे प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व जागने की आदत बन गयी है, जिससे सूर्य नमस्कार तथा सूत्रपाठ का समय निकल जाता है। और यह रेयुकाई से जुड़ने के बाद ही संभव हुआ। इसका श्रेय अपने ओया जापानी कुमार और रेयुकाई को देता हूँ, जोकि मेरे अन्दर की सारी बुराईयों - ईर्ष्या करना, लोभ करना, झगड़ना, बच्चों को डांटना-फटकारना व नकारात्मक सोच रखना आदि समाप्त हो चुकी हैं।

वर्ष 2004 से शिबुचो तोमोत्सुगु मासुनागा जब भी भारत आये उनका प्रवास का कार्यक्रम तथा लघु सभाएं आयोजन सारनाथ में होता रहा है। इससे मेरी ही नहीं अपितु समस्त रेयुकाई सदस्यों की सोच को साकारात्मकता की ओर मुड़ने पर विवश कर नई चेतना का संचार हुआ।

उनकी वाणी में रेयुकाई अभ्यास, माता-पिता के प्रति सम्मान, पूर्वज-स्मरण, आपसी सद्भाव और सामंजस्य, बेहतर समाज के निर्माण, विश्व-शांति स्थापित करने के लिये अनुपम भावना दिखाई पड़ती है।

रेयुकाई अज्ञानता को दूर कर ज्ञान व विवेक से सीखते रहने, दयालु होकर सकारात्मक सोच का जीवन जीने की एक सिद्धान्त है, जिसे मैंने करीब से अनुभव किया है।

मुझे जुलाई 2010 में जापान जाने का आमंत्रण मिला, इसके लिये मैं रेयुकाई को धन्यवाद देता हूँ। जापान जाकर मैंने अन्य देशों के रेयुकाई सदस्यों के साथ ओदाइमोकु, सूत्रपाठ, रेयुकाई सदस्यों के बीच स्व-विकास, तर्क-वितर्क की विधियाँ, अपने व्यवहार में परोपकारी दृष्टिकोण का समावेश, विश्व शान्ति स्थापित कर बेहतर विश्व का निर्माण, इत्यादि विषयों पर वार्ता में भाग लिया।

जापान के शाकादेन एवं मिरोकुसान का दर्शन कर मेरा स्वप्न सच होकर मन और मस्तिष्क को आलोकित किया। साक्षात् शाक्य मुनि बुद्ध का दर्शन पाकर मैं धन्य हूँ।

श्री तोमोत्सुगु मासुनागा, श्रीमती यूका मासुनागा, श्रीमती अकामी तथा श्री मासारु मियाची का प्रेम और स्नेह हमेशा याद रहेगा।

धन्यवाद!



आओ जापानी सीखें - २८

सामान्य बातचीत

काईमोनो शिमाशो (आओ खरीदारी करें)

ई मिसे ओ शित्ते इमास का.....क्या आप एक अच्छी दुकान सुझा सकते हैं ?
एजी शिमबुन वा दोको दे काइमास कामैं एक अंग्रेजी समाचार पत्र कहां खरीद सकता हूं ?
कोनो हेन दे इचिबान औकी शातेन वा दोको देस कायहां करीब में सबसे बड़ी पुस्तक की दुकान कहां है ?
कोनो हेन नी दिसाकाउन्तो शौप्पु गा अरिमास काक्या यहां आसपास कोई रियायती दुकान है ?
अनो मिसे दे निचिदौहिन ओ काउ कोतो गा देकिमास काक्या मुझे उस भंडार में दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं मिल सकती हैं ?

शब्दावली

ई मिसेअच्छी दुकान । शातेनपुस्तक की दुकान ।
शित्ते इमासजानना / सुझाना । दिसाकाउन्तोछूट / रियायत ।
एजीअंग्रेजी लिपि । दोकोकहां ।
शिमबुनसमाचारपत्र । शौप्पुदुकान ।
काइमासखरीदने के काबिल । अनो मिसेउस भंडार ।
कोनो हेनयहां पास में । निचिदौहिनदैनिक आवश्यकता की वस्तुएं ।
इचिबान औकीसबसे बड़ा । देकिमाससकता हूँ / कर सकता हूँ ।

आओ जापानी सीखें - २९

ओक्याकुसामा नि इराशाईमास (ग्राहकों का स्वागत)

इराशाईमासेआपका स्वागत है ।
नानि ओ ओसागाशि देस काआप क्या खोज रहे हैं ।
नानि ओ नासाइमास काआप क्या खरीदना चाहेंगे ?
-- वा इकागा देस काआप कैसा चाहते हैं ?
शौशौ ओमाचि कुदासाइकृपया, प्रतीक्षा कीजिये ।

शब्दावली

ओक्याकुसामाग्राहक । इकागाकिस प्रकार -- ?
इराशाईमासेस्वागत । देसहै / हूं / हैं ।
नानिक्या । शौशौपल भर को / ज़रा सा ।
ओसागाशिखोज रहे हैं । ओमाचिप्रतीक्षा कीजिये ।
नासाइमासक्या आप चाहते हैं । कुदासाइकृपया ।

रेयुकाई अभ्यास

की प्रतिज्ञा

रेयुकाई के संस्थापक, श्रद्धेय काकूतारो कूबो जी ने कमल-सूत्र पर आधारित विश्व भर के मानव के लिये ऐसी शिक्षाओं को व्यवस्थित किया जिससे लोग बोधिसत्व अभ्यास पर चल सकें। उन्होंने समाज के सुधार और उसे श्रेयस्कर बनाने के लिये एक मार्ग सुझाया और कहा “अनुकम्पापूर्वक ऐसा कर दें कि इन्हीं सच्चरित्र गुणों के बल से हम और सब प्राणी अग्रबोधि प्राप्त कर सकें तथा इस सद्धर्म का सर्वत्र प्रचार हो जाये।”

रेयुकाई की प्रथम प्रधान श्रीमती किमी कोतानी ने बुद्धत्व संसार के महत्व को पहचाना और उसके प्रसार के लिये कहा “अगर सभी सदस्यों के परिवारजन रेयुकाई की शिक्षाओं का अभ्यास करें, तब उनकी संतति को अच्छा इंसान बनने का आशीर्वाद प्राप्त होगा और वे शांतिपूर्ण और आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। अगर इस तरह से प्रत्येक परिवार में होगा तभी बुद्धत्व संसार का निर्माण होगा।

माता-पिता और पूर्वजों के प्रति, गुरुओं के प्रति, देश के प्रति और सिद्धांतों के प्रति, हम इन चार कृतज्ञताओं के ऋणी और अनुगृहीत हैं, जिसे पूरा करके हमारा विश्व-शांति के लिये इससे बेहतर सहयोग और कुछ नहीं हो सकता। हम रेयुकाई के सदस्य, हमारे संस्थापकों और वरिष्ठ सदस्यों द्वारा प्राप्त महान उपलब्धियों का पालन करते हुये अपने कार्यों द्वारा एकत्रित किये गुणों से विश्व-शांति के लिये प्रयत्न कर सकते हैं।

इन्हीं कारणों से हम प्रतिज्ञा करते हैं कि :

1. पूर्वज-स्मरण और मिचिबिकी का अभ्यास करेंगे।
2. खुशहाल परिवार और घर के महत्व पर जोर देंगे व इससे प्राप्त उपलब्धियों का प्रसार करेंगे।
3. शिक्षाओं का अभ्यास करेंगे व समाज व समुदाय के कल्याण हेतु कार्य करेंगे।

जिस तरह हम अपनी प्रगति, दूसरों के ज्ञान और बेहतर समाज के लिये प्रयत्न करते हैं, उसी तरह से हम विश्व-शांति स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था

सी-2/3, सफ़दरजंग डेवेलपमेंट एरिया, नई दिल्ली - 110016, इंडिया

दूरभाष : +91-11-26522039 टेलिफ़ैक्स : +91-11-26522040

ई-मेल : info@reiyukaiindia.org • वैबसाईट : <http://www.reiyukaiindia.org>